वनिकी प्रसार वन चेतना शिविर -माघ मेला २०२१

विश्व आयुर्वेद मिशन एवं पारि पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केन्द्र के संयुक्त तत्वावधान में

राष्ट्रीय कार्यशाला

रोग प्रतिरोधक क्षमता वर्धक प्रमुख वनौषधियाँ – उत्पादन, संरक्षण एवं चिकित्सीय प्रयोग (वर्तमान परिदृश्य में)

Immunity Booster Herbs - Their Cultivation, Preservation & Therapeutic Utility

सौजन्य से- श्री धन्वन्तरि हर्बल्स

दिनांकः 18.02.2021, बृहस्पतिवार

दिनांक 18.02.2021 को पारि-पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केंद्र के माघमेला स्थित वन चेतना शिविर में विश्व आयुर्वेद मिशन के संयुक्त तत्वावधान में रोग प्रतिरोधक क्षमता वर्धक प्रमुख वनौषधियाँ - उत्पादन, संरक्षण एवं चिकित्सीय प्रयोग (वर्तमान परिदृश्य में)" विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन श्री धन्वन्तरि हर्बल्स के सौजन्य से माघ मेला में वन अनुसंधान केन्द्र, त्रिवेणी मार्ग, परेड ग्राउण्ड, प्रयागराज स्थित शिविर में गुरुवार दिनांकः 18.02.2021 को आयोजित हुआ । जिसमें आयुर्वेद चिकित्सा विशेषज्ञों के साथ साथ वन अनुसंधान केन्द्र के वैज्ञानिक एवं प्रगतिशील किसानों ने भी भाग लिया । कार्यक्रम के प्रारम्भ में वन अनुसंधान केंद्र के प्रमुख डॉ संजय सिंह ने अतिथियों का स्वागत किया एवं अपने उद्बोधन में उन्होंने भारत को अमूल्य वन सम्पदा का भण्डार बताया । डॉ सिंह ने स्पष्ट किया कि हमारे देश में रोग प्रतिरोधक क्षमता वर्धक अनेकों वनौषधियाँ उपलब्ध हैं यदि इनका समुचित उत्पादन, भण्डारण एवं संरक्षण किया जाये तो न केवल अपने देश में अपितु वैश्विक स्तर पर इनकी आपूर्ति की जा सकती है । इसके बाद विश्व आयुर्वेद मिशन के अध्यक्ष प्रो (डॉ) जी एस तोमर ने कार्यशाला

का विषय प्रवर्तन करते हुए वर्तमान परिदृश्य में इम्युनिटी को बढ़ाने वाली हर्बल औषधियों की आवश्यकता एवं उपयोगिता पर विशेष प्रकाश डाला। डॉ तोमर ने बताया कि कोरोना कालखण्ड में गिलोय, तुलसी,

अ़सगंध, शतावर, मुलहठी, अदरख एवं आँवला आदि के रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने वाले गुणों से हमारे देश के ही नहीं सम्पूर्ण विश्व के लोग काफ़ी परिचित हो चुके हैं। इस तथ्य को नकारा नहीं जा सकता कि आने वाले समय में इसी प्रकार के अन्य वायरस पुन: हमारे लिए संकट पैदा कर सकते हैं। ऐसी स्थिति में हमारी इम्युनिटी ही हमारे स्वास्थ्य की रक्षा कर सकती है। आयुर्वेद में इस प्रकार की औषधियों की भरमार है जो वर्तमान परिदृश्य में हमारे लिए संजीवनी सिद्ध हो सकती हैं। इसी उद्देश्य के दृष्टिगत वर्तमान कार्यशाला का आयोजन किया गया है। इसमें इन औषधियों के उत्पादन, संरक्षण एवं चिकित्सीय प्रयोग पर विस्तृत चर्चा की जा रही है। वतौर मुख्य अतिथि पूर्व आयुक्त श्री आर एस वर्मा ने आयुर्वेदीय वनौषधियों की कार्यकारिता पर अपने व्यक्तिगत अनुभव साझा करते हुए इन्हें आज के परिवेश हेतु अत्यंत आवश्यक एवं उपयोगी बताया। विशिष्ट अतिथि के रूप में अपने उद्बोधन में माघमेला प्रभारी डॉ विवेक चतुर्वेदी ने इम्युनिटी वर्धक हर्बल औषधियों की कोरोना महामारी के दौरान वैश्विक माँग को देखते हुए इनके गुणवत्ता पूर्ण उत्पादन, भण्डारण एवं औषधि निर्माण के द्वारा विश्व बाज़ार के माध्यम से अपनी अर्थव्यवस्था को मज़बूती प्रदान की जा सकती है। इस अवसर पर वनौषधि विशेषज्ञ एवं प्रभारी चिकित्साधिकारी डॉ अवनीश पाण्डेय ने महत्वपूर्ण रोग प्रतिरोधक क्षमता वर्धक औषधियों के गुण कर्मों की विस्तृत चर्चा की ।कार्यशाला में अपने उद्बोधन में डॉ कुमुद दुबे ने एण्टीआॉक्सीडेन्ट न्यूट्रास्युटिकल्स पर विशेष प्रकाश डाला। डॉ अनीता तोमर ने रोग प्रतिरोधक क्षमता वर्धक वनौषधियों के उत्पादन एवं संरक्षण विधि को विस्तार से बताया एवं डॉ अनुभा श्रीवास्तव ने सहजन

के रोग प्रतिरोधक क्षमता वर्धक गुणों पर चर्चा की। विश्व आयुर्वेद परिषद काशी प्रांत के अध्यक्ष डॉ पी एस पाण्डेय ने पोस्ट कोरोना पीरियड में आयुर्वेदीय औषधियों की आवश्यकता एवं महत्व पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर डॉ बी एस रघुवंशी, डॉ सुधांशु उपाध्याय एवं डॉ एम डी दुबे ने भी अपने अनुभव साझा किए।

मुख्य अतिथि (श्री आर एस वर्मा,आई ए एस (से.नि.) पूर्व आयुक्त) एवं विशिष्ट अतिथि (डॉ विवेक चतुर्वेदी पी सी एस माघ मेला प्रभारी) द्वारा दीप प्रज्वलन एवं धन्वन्तरी पूजन

अतिथियों का स्वागत एवं अभिनन्दन

पारि पुनर्स्थापन वन अनुसंधान कन्द्र के प्रमुख द्वारा स्वागत भाषाण

कुमारी (Aloe vera Tourn. Ex
लसुन/रसोन (Allium sativum Linn.)
Cardioprotective, Antilipidaemic, Anticarcinogenic, Hypoglycaemic, Immunostimulant Properties
FRCER

विलुप्त होती फल प्रजातियाँ
परिचय
बेर (Ber)
फालसा (Phalsa)
COAL MINED OUT
Before
Coal mined area of Dhanb
FRCER

विलुप्त होती फल
परिचय
आमरा (Amra)
बड़हल (Barhal)
GREEN PRACTICES-DEVE
FOR ECO-RESTORATION
COAL MINED OUT AREAS
Before
After
FRCER

औषधियाँ एवं उनके उपयोग
कुमारी (Aloe vera Tourn. Ex Lin
लसुन/रसोन (Allium sativ
FRCER

औषधियाँ एवं उनके उपयोग
कुमारी (Aloe vera Tourn. Ex Linn
वृष्य, व्रणरोपण, दीपन, पाचन,
रक्तविकार एवं अग्निमांद्य में लाभकारी
लसुन/रसोन (Allium sativum L
अग्निमांद्य में लाभकारी
Cardioprotective, Antilip
Anticarcinogenic, Hypogl
Immunostimulant Proper
पुनर्नवा (Boerhav

राष्ट्रीय कार्यशाला
डॉ॰ संजय सिंह
श्री आर एस वर्मा
डॉ॰ विवेक चतुर्वेदी
प्रो॰ जी॰ एस॰ तोमर

औषधियों की गुणवत्ता भंडारण एवं उत्पादन से अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाया जा सकता है : डॉ विवेक चतुर्वेदी

विमलेश मिश्र

प्रयागराज । पारि-पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केंद्र के माघमेला स्थित वन चेतना शिविर में विश्व आयुर्वेद मिशन के संयुक्त तत्वावधान में रोग प्रतिरोधक क्षमता वर्धक प्रमुख वनौषधियों - उत्पादन, संरक्षण एवं चिकित्सीय प्रयोग (वर्तमान परिदृश्य में)' विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन श्री धन्वन्तरि हर्बल्स के सौजन्य से माघ मेला में वन अनुसंधान केन्द्र, त्रिवेणी मार्ग, परेड ग्राउण्ड, प्रयागराज स्थित शिविर में आयोजित हुआ । जिसमें आयुर्वेद चिकित्सा विशेषज्ञों के साथ साथ वन अनुसंधान केन्द्र के वैज्ञानिक एवं प्रगतिशील किसानों ने भी भाग लिया । कार्यक्रम के प्रारम्भ में वन अनुसंधान केंद्र के प्रमुख डॉ संजय सिंह ने अतिथियों का स्वागत किया एवं अपने उद्बोधन में उन्होंने भारत को अमूल्य वन सम्पदा का भण्डार बताया । डॉ सिंह ने स्पष्ट किया कि हमारे देश में रोग प्रतिरोधक क्षमता वर्धक अनेकों वनौषधियाँ उपलब्ध हैं यदि इनका समुचित उत्पादन, भण्डारण एवं संरक्षण किया जाये तो न केवल अपने देश में अपितु वैश्विक स्तर पर इनकी आपूर्ति की जा सकती है । इसके बाद विश्व आयुर्वेद मिशन के अध्यक्ष प्रो (डॉ) जी एस तोमर ने कार्यशाला का विषय प्रवर्तन करते हुए वर्तमान परिदृश्य में इम्युनिटी को बढ़ाने वाली हर्बल औषधियों की आवश्यकता एवं उपयोगिता पर विशेष प्रकाश डाला । डॉ तोमर ने बताया कि कोरोना कालखण्ड में गिलोय, तुलसी, अ.सगंध, शतावर, मुलहठी, अदरख एवं आँवला आदि के रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने वाले गुणों से हमारे देश के ही नहीं सम्पूर्ण विश्व के लोग काफी परिचित हो चुके हैं । इस तथ्य को नकारा नहीं जा सकता कि आने वाले समय में इसी प्रकार के अन्य वायरस पुनः हमारे लिए संकट पैदा कर सकते हैं । ऐसी स्थिति में हमारी इम्युनिटी ही हमारे स्वास्थ्य की रक्षा कर सकती है । आयुर्वेद में इस प्रकार की औषधियों की भरमार है जो वर्तमान परिदृश्य में हमारे लिए संजीवनी सिद्ध हो सकती हैं । इसी उद्देश्य के दृष्टिगत वर्तमान कार्यशाला का आयोजन किया गया है । इसमें इन औषधियों के उत्पादन, संरक्षण एवं चिकित्सीय प्रयोग पर विस्तृत चर्चा की जा रही है । वतौर मुख्य अतिथि पूर्व आयुक्त आर एस वर्मा ने आयुर्वेदीय वनौषधियों की कार्यकारिता पर अपने व्यक्तिगत अनुभव साझा करते हुए इन्हें आज के परिवेश हेतु अत्यंत आवश्यक एवं उपयोगी बताया । विशिष्ट अतिथि के रूप में अपने उद्बोधन में माघमेला प्रभारी डॉ विवेक चतुर्वेदी ने इम्युनिटी वर्धक हर्बल औषधियों की कोरोना महामारी के दौरान वैश्विक माँग को देखते हुए इनके गुणवत्ता पूर्ण उत्पादन, भण्डारण एवं औषधि निर्माण के द्वारा विश्व बाजार के माध्यम से अपनी अर्थव्यवस्था को मज़बूती प्रदान की जा सकती है । इस अवसर पर वनौषधि विशेषज्ञ एवं प्रभारी चिकित्साधिकारी डॉ अवनीश पाण्डेय ने महत्वपूर्ण रोग प्रतिरोधक क्षमता वर्धक औषधियों के गुण कर्मों की विस्तृत चर्चा की ।कार्यशाला में अपने उद्बोधन में डॉ कुमुद दुबे ने एण्टीऑक्सीडेन्ट न्यूट्रास्युटिकल्स पर विशेष प्रकाश डाला । डॉ अनीता तोमर ने रोग प्रतिरोधक क्षमता वर्धक वनौषधियों के उत्पादन एवं संरक्षण विधि को विस्तार से बताया एवं डॉ अनुभा श्रीवास्तव ने सहजन के रोग प्रतिरोधक क्षमता वर्धक गुणों पर चर्चा की । विश्व आयुर्वेद परिषद काशी प्रांत के अध्यक्ष डॉ पी एस पाण्डेय ने पोस्ट कोरोना पीरियड में आयुर्वेदीय औषधियों की आवश्यकता एवं महत्व पर प्रकाश डाला । इस अवसर पर डॉ बी एस रघुवंशी, डॉ सुधांशु उपाध्याय एवं डॉ एम डी दुबे ने भी अपने अनुभव साझा किए ।

हिंदुस्तान

माघ मेला में परेड स्थित वन अनुसंधान केन्द्र के शिविर में आयोजित संगोष्ठी को संबोधित करते मेला अधिकारी विवेक चतुर्वेदी। • हिन्दुस्तान

अमूल्य वन संपदा का भंडार है भारत

प्रयागराज। पारि-पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केंद्र के माघ मेला स्थित वन चेतना शिविर में गुरुवार को विश्व आयुर्वेद मिशन के संयुक्त तत्वावधान में एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। प्रमुख डॉ. संजय सिंह ने अतिथियों का स्वागत किया। उन्होंने भारत को अमूल्य वन सम्पदा का भंडार बताया। आयुर्वेद मिशन के अध्यक्ष प्रो. जीएस तोमर ने प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने वाली हर्बल औषधियों की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। विशिष्ट अतिथि के रूप में माघमेला प्रभारी डॉ. विवेक चतुर्वेदी व प्रभारी चिकित्साधिकारी डॉ. अवनीश पांडेय ने भी प्रतिरोधक क्षमता वर्धक औषधियों के बारे में विस्तृत चर्चा की।

दैनिक जागरण

ये लगा निशाना...

गुब्बारे [illegible] से फोड़ने का खेल बहुत पुराना है और मेलों में सहज गतिविधि भी। इसके बिन मेले फीके ल[illegible] चल रहा मा[illegible] मेला भी इससे अछूता नहीं है। परेड मैदान स्थित मेला बाजार [illegible] एक [illegible] दोप[illegible] इविवि [illegible] क्षेत्राएं • [illegible]

इम्युनिटी बढ़ाने में कारगर हैं आयुर्वेदिक वनौषधियां

जागरण संवाददाता, प्रयागराज : पारि पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केंद्र के माघ मेला स्थित वन चेतना शिविर में गुरुवार को रोग प्रतिरोधक क्षमता वर्धक प्रमुख औषधियां-उत्पादन, संरक्षण और चिकित्सा प्रयोग पर कार्यशाला हुई। यह आयोजन विश्व आयुर्वेद मिशन और पारि पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केंद्र ने मिलकर किया।

त्रिवेणी मार्ग पर स्थित शिविर में मुख्य अतिथि पूर्व आयुक्त आरएस वर्मा ने आयुर्वेदिक वनौषधियों की कार्यकारिता पर अपने व्यक्तिगत अनुभव बताए। माघ मेला के प्रभारी डा. विवेक चतुर्वेदी ने इम्युनिटी वर्धक हर्बल औषधियों की कोरोना महामारी के दौरान वैश्विक मांग को देखते हुए इनकी उपयोगिता व उत्पादन पर प्रकाश डाला। वन अनुसंधान केंद्र के प्रमुख डा. संजय सिंह ने कहा कि हमारे देश में रोग प्रतिरोधक क्षमता वर्धक अनेक वनौषधियां उपलब्ध हैं।

विश्व आयुर्वेद मिशन के अध्यक्ष डॉ. जीएस तोमर ने इम्युनिटी को बढ़ाने वाली हर्बल औषधियों की आवश्यकता व उपयोगिता पर प्रकाश डाला। कार्यशाला में डा. अवनीश पांडेय, डा. कुमुद दुबे, डा. अनीता तोमर डा. अनुभा श्रीवास्तव, डा. पीएस पांडेय ने भी अपने अनुभव साझा किए।

प्रभु

जागरण संवाद

नमः शिवाय, [illegible] का उद्घोष [illegible] का कारवां हा[illegible] मेला क्षेत्र में [illegible] आंखें उनके [illegible] भव्य रथ पर [illegible] संस्थान के सं[illegible] झलक पाने [illegible] श्रद्धालुओं ने [illegible] पुष्पवर्षा कर [illegible] जी ने भक्तों [illegible] पूर्ण होने का [illegible]

आइजी [illegible] ग्राउंड स्थित [illegible] महिमा का ब[illegible] का शुभारंभ [illegible] अलावा कान[illegible] वाराणसी, [illegible]

amar ujala

गिलोय, तुलसी की महत्ता बताई

प्रयागराज। कोरोना संक्रमण काल में कोरोना कालखंड में गिलोय, तुलसी, अश्वगंधा, शतावर, मुलहठी, अदरख एवं आंवला के प्रतिरोधक क्षमता से देश ही नहीं विदेशों में भी लोग परिचित हुए।

ये विचार माघ मेला क्षेत्र में वन अनुसंधान केंद्र और विश्व आयुर्वेद मिशन की ओर से बृहस्पतिवार को आयोजित राष्ट्रीय कार्यशाला में विश्व आयुर्वेद मिशन के अध्यक्ष प्रोफेसर जीएस तोमर ने बतौर मुख्य वक्ता व्यक्त किए।

मुख्य अतिथि पूर्व आयुक्त आरएस वर्मा एवं विशिष्ट अतिथि मेलाधिकारी विवेक चतुर्वेदी ने आयुर्वेदिक दवाओं के बारे में अनुभव साझा किए। डॉ अनुभा श्रीवास्तव, डॉ कुमुद दुबे और डॉ अनीता तोमर, डॉ बीएस रघुवंशी, डॉ सुधांशु उपाध्याय व डॉ एमडी दुबे ने भी अपने विचार रखे। ब्यूरो

बालजी हिन्दी दैनिक
Website: www.baljinews.com

भारत अमूल्य वन सम्पदा का भण्डार

रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने वाले गुणों से हमारे देश के ही नहीं सम्पूर्ण विश्व के लोग काफ़ी परिचित-डॉ तोमर

बालजी न्यूज

प्रयागराज। पारि-पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केंद्र के माघमेला स्थित वन चेतना शिविर में विश्व आयुर्वेद मिशन के संयुक्त तत्वावधान में रोग प्रतिरोधक क्षमता वर्धक प्रमुख वनौषधियाँ - उत्पादन, संरक्षण एवं चिकित्सीय प्रयोग (वर्तमान परिदृश्य में) विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन श्री धन्वन्तरि हर्बल्स के सौजन्य से माघ मेला में वन अनुसंधान केन्द्र, त्रिवेणी मार्ग, परेड ग्राउण्ड, प्रयागराज स्थित शिविर में गुरुवार को आयोजित हुआ। जिसमें आयुर्वेद चिकित्सा विशेषज्ञों के साथ साथ वन अनुसंधान केन्द्र के वैज्ञानिक एवं प्रगतिशील किसानों ने भी भाग लिया। कार्यक्रम के प्रारम्भ में वन अनुसंधान केंद्र के प्रमुख डॉ संजय सिंह ने अतिथियों का स्वागत किया एवं अपने उद्बोधन में उन्होंने भारत को अमूल्य वन सम्पदा का भण्डार बताया। डॉ सिंह ने स्पष्ट किया कि हमारे देश में रोग प्रतिरोधक क्षमता वर्धक अनेकों वनौषधियाँ उपलब्ध हैं यदि इनका समुचित उत्पादन, भण्डारण एवं संरक्षण किया जाये तो न केवल अपने देश में अपितु वैश्विक स्तर पर इनकी आपूर्ति की जा सकती है। इसके बाद विश्व आयुर्वेद मिशन के अध्यक्ष प्रो (डॉ) जी एस तोमर ने कार्यशाला का विषय प्रवर्तन करते हुए वर्तमान परिदृश्य में इम्युनिटी को बढ़ाने वाली हर्बल औषधियों की आवश्यकता एवं

उपयोगिता पर विशेष प्रकाश डाला। डॉ तोमर ने बताया कि कोरोना कालखण्ड में गिलोय, तुलसी, असगंध, शतावर, मुलहठी, अदरख एवं आँवला आदि के रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने वाले गुणों से हमारे देश के ही नहीं सम्पूर्ण विश्व के लोग काफी परिचित हो चुके हैं। इस तथ्य को नकारा नहीं जा सकता कि आने वाले समय में इसी प्रकार के अन्य वायरस पुनः हमारे लिए संकट पैदा कर सकते हैं। ऐसी स्थिति में हमारी इम्युनिटी ही हमारे स्वास्थ्य की रक्षा कर सकती है। आयुर्वेद में इस प्रकार की औषधियों की भरमार है जो वर्तमान परिदृश्य में हमारे लिए संजीवनी सिद्ध हो सकती हैं। इसी उद्देश्य के दृष्टिगत वर्तमान कार्यशाला का आयोजन किया गया है। इसमें इन औषधियों के उत्पादन, संरक्षण एवं चिकित्सीय प्रयोग पर विस्तृत चर्चा की जा रही है। वतीर मुख्य अतिथि पूर्व आयुक्त श्री आर एस वर्मा ने आयुर्वेदीय वनौषधियों की कार्यकारिता पर अपने व्यक्तिगत अनुभव साझा करते हुए इन्हें आज के परिवेश हेतु अत्यंत आवश्यक एवं उपयोगी बताया। विशिष्ट अतिथि के रूप में अपने उद्बोधन में माघमेला प्रभारी डॉ विवेक चतुर्वेदी ने इम्युनिटी वर्धक हर्बल औषधियों की कोरोना महामारी के दौरान वैश्विक माँग को देखते हुए इनके गुणवत्ता पूर्ण उत्पादन, भण्डारण एवं औषधि निर्माण के द्वारा विश्व बाज़ार के माध्यम से अपनी अर्थव्यवस्था को मज़बूती प्रदान की जा सकती है। इस अवसर पर वनौषधि विशेषज्ञ एवं प्रभारी चिकित्साधिकारी डॉ अवनीश पाण्डेय ने महत्वपूर्ण रोग प्रतिरोधक क्षमता वर्धक औषधियों के गुण कर्मों की विस्तृत चर्चा की।

कार्यशाला में अपने उद्बोधन में डॉ कुमुद दुबे ने एण्टीआक्सीडेन्ट न्यूट्रास्युटिकल्स पर विशेष प्रकाश डाला। डॉ अनीता तोमर ने रोग प्रतिरोधक क्षमता वर्धक वनौषधियों के उत्पादन एवं संरक्षण विधि को विस्तार से बताया एवं डॉ अनुभा श्रीवास्तव ने सहजन के रोग प्रतिरोधक क्षमता वर्धक गुणों पर चर्चा की। विश्व आयुर्वेद परिषद काशी प्रांत के अध्यक्ष डॉ पी एस पाण्डेय ने पोस्ट कोरोना पीरियड में आयुर्वेदीय औषधियों की आवश्यकता एवं महत्व पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर डॉ बी एस रघुवंशी, डॉ सुधांशु उपाध्याय एवं डॉ एम डी दुबे ने भी अपने अनुभव साझा किए।

भारत में रोग प्रतिरोधक क्षमतावर्धक अनेकों वनौषधियाँ उपलब्ध : डॉ संजय

प्रयागराज। हमारे देश में रोग प्रतिरोधक क्षमता वर्धक अनेकों वनौषधियां उपलब्ध हैं, यदि इनका समुचित उत्पादन, भण्डारण एवं संरक्षण किया जाये तो न केवल अपने देश में अपितु वैश्विक स्तर पर इनकी आपूर्ति की जा सकती है।

यह बातें वन अनुसंधान केंद्र के प्रमुख डॉ.संजय सिंह ने गुरूवार को माघ मेला स्थित पारि-पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केंद्र के वन चेतना शिविर में विश्व आयुर्वेद मिशन के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित ''रोग प्रतिरोधक क्षमता वर्धक प्रमुख वनौषधियां-उत्पादन संरक्षण एवं चिकित्सीय प्रयोग- विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला में सम्बोधित करते हुए कहा। उन्होंने भारत को अमूल्य वन सम्पदा का भण्डार बताया।

धन्वन्तरि हर्बल्स के सौजन्य से आयोजित कार्यक्रम में विश्व आयुर्वेद मिशन के अध्यक्ष प्रो.डॉ. जी.एस तोमर ने वर्तमान परिदृश्य में इम्युनिटी बढ़ाने वाली हर्बल औषधियों की आवश्यकता एवं उपयोगिता पर विशेष प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि कोरोना कालखण्ड में गिलोय, तुलसी, अश्वगंधा, शतावर, मुलहठी,

अदरक एवं आँवला आदि रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने वाले गुणों से हमारे देश के ही नहीं सम्पूर्ण विश्व के लोग परिचित हो चुके हैं। इस तथ्य को नकारा नहीं जा सकता कि आने वाले समय में इसी प्रकार के अन्य वायरस पुनः हमारे लिए संकट पैदा कर सकते हैं। ऐसी स्थिति में हमारी इम्युनिटी ही हमारे स्वास्थ्य की रक्षा कर सकती है। आयुर्वेद में इस प्रकार की औषधियों की भरमार है जो वर्तमान परिदृश्य में हमारे लिए संजीवनी सिद्ध हो सकती हैं।

पूर्व आयुक्त आर.एस वर्मा ने आयुर्वेदीय वनौषधियों की कार्यकारिता पर अपने व्यक्तिगत अनुभव साझा करते हुए इन्हें आज के परिवेश हेतु अत्यंत आवश्यक एवं उपयोगी बताया। माघमेला प्रभारी डॉ. विवेक चतुर्वेदी ने कहा इम्युनिटी वर्धक हर्बल औषधियों की कोरोना महामारी के दौरान वैश्विक मांग को देखते हुए इनके गुणवत्ता पूर्ण उत्पादन, भण्डारण एवं औषधि निर्माण द्वारा विश्व बाजार के माध्यम से अपनी अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान की जा सकती है। वनौषधि विशेषज्ञ एवं प्रभारी चिकित्साधिकारी डॉ.अवनीश पाण्डेय ने महत्वपूर्ण रोग प्रतिरोधक क्षमता वर्धक औषधियों के गुण कर्मों की विस्तृत चर्चा की। डॉ.कुमुद दुबे ने एण्टी ऑक्सीडेन्ट न्यूट्रास्युटिकल्स युक्त पौधों पर चर्चा करते हुए रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने में इसके महत्व पर प्रकाश डाला। डॉ.अनीता तोमर ने रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए प्रयोग में आने वाली वनौषधियों से अवगत कराते हुए इसके उत्पादन व संरक्षण पर चर्चा की। वैज्ञानिक डॉ.अनुभा श्रीवास्तव ने रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में सहजन के महत्व एवं उपयोग पर प्रकाश डाला। विश्व आयुर्वेद परिषद काशी प्रांत के अध्यक्ष डॉ. पी.एस पाण्डेय ने पोस्ट कोरोना पीरियड में आयुर्वेदीय औषधियों की आवश्यकता एवं महत्व पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर डॉ. बी.एस रघुवंशी, डॉ.सुधांशु उपाध्याय एवं डॉ. एम.डी दुबे ने भी अपने अनुभव साझा किए।

पारि-पुनर्स्थापन वन अनुसंधान की माघमेला स्थित शिविर में हुई एक दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला

प्रयागराज। पारि-पुनर्स्थापन वन अनुसंधान केंद्र के माघमेला स्थित वन चेतना शिविर में गुरूवार को विश्व आयुर्वेद मिशन के संयुक्त तत्वावधान में रोग प्रतिरोधक क्षमता वर्धक प्रमुख वनौषधियाँ-उत्पादन, संरक्षण एवं चिकित्सीय प्रयोग (वर्तमान परिदृश्य में) विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन धन्वन्तरि हर्बल्स के सौजन्य से माघ मेला में वन अनुसंधान केन्द्र त्रिवेणी मार्ग परेड ग्राउण्ड स्थित शिविर में आयोजित किया गया। जिसमें आयुर्वेद चिकित्सा विशेषज्ञों के साथ-साथ वन अनुसंधान केन्द्र के वैज्ञानिक एवं प्रगतिशील किसानों ने भी भाग लिया।

कार्यक्रम के प्रारम्भ में वन अनुसंधान केंद्र के प्रमुख डॉ० संजय सिंह ने अतिथियों का स्वागत किया एवं अपने उद्बोधन में उन्होंने भारत को अमूल्य वन सम्पदा का भण्डार बताया। इसके बाद विश्व आयुर्वेद मिशन के अध्यक्ष प्रो० (डॉ०) जीएस तोमर ने कार्यशाला का विषय प्रवर्तन करते हुए वर्तमान परिदृश्य में इम्युनिटी को बढ़ाने वाली हर्बल औषधियों की आवश्यकता एवं उपयोगिता पर विशेष प्रकाश डाला। इसी उद्देश्य के दृष्टिगत वर्तमान कार्यशाला का आयोजन किया गया है। बतौर मुख्य अतिथि पूर्व आयुक्त आरएस वर्मा ने आयुर्वेदीय वनौषधियों की कार्यकारिता पर अपने व्यक्तिगत अनुभव साझा करते हुए इन्हें आज के परिवेश हेतु अत्यंत आवश्यक एवं उपयोगी बताया। विशिष्ट अतिथि के रूप में अपने उद्बोधन में माघमेला प्रभारी डॉ० विवेक चतुर्वेदी ने इम्युनिटी वर्धक हर्बल औषधियों की कोरोना महामारी के दौरान वैश्विक माँग को देखते हुए इनके गुणवत्ता पूर्ण उत्पादन, भण्डारण एवं औषधि निर्माण के द्वारा विश्व बाजार के माध्यम से अपनी अर्थव्यवस्था को मजबूती प्रदान की जा सकती है। इस अवसर पर वनौषधि विशेषज्ञ एवं प्रभारी चिकित्साधिकारी डॉ० अवनीश पाण्डेय ने महत्वपूर्ण रोग प्रतिरोधक क्षमता वर्धक औषधियों के गुण कर्मों की विस्तृत चर्चा की। कार्यशाला में अपने उद्बोधन में डॉ० कुमुद दुबे ने एण्टीऑक्सीडेन्ट न्यूट्रास्युटिकल्स पर विशेष प्रकाश डाला। डॉ० अनीता तोमर ने रोग प्रतिरोधक क्षमता वर्धक वनौषधियों के उत्पादन एवं संरक्षण विधि को विस्तार से बताया एवं डॉ० अनुभा श्रीवास्तव ने सहजन के रोग प्रतिरोधक क्षमता वर्धक गुणों पर चर्चा की। इस अवसर पर डॉ० बीएस रघुवंशी, डॉ० शुभांशु उपाध्याय एवं डॉ० एमडी दुबे ने भी अपने अनुभव साझा किए।